निश्चय का आधार नॉलेज

अध्यात्म का आधार ही समझ है। हम सभी बचपन से आध्यात्मिक ही हैं। लेकिन इस शब्द को इतना ज़्यादा घुमा-फिराकर सबके सामने रखा गया है कि अरे, ये तो आध्यात्मिक हैं, इनका तो इस दुनिया से कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन आपको ये समझने की ज़रूरत है कि जो आध्यात्मिक है दरअसल वही इस दुनिया को समझ पाता है। अध्यात्म हमें मन की उन छोटी-छोटी बातों को समझाता है जो हमारे दर्द और दुःख का कारण बनती हैं। सबसे पहले आप शरीर को ही ले लें, अब शरीर के एक-एक अंग का डॉक्टर बनने वाले विद्यार्थी बहुत गहराई से अध्ययन करते हैं। कहाँ क्या पाया जाता है, पहले तो ये जानकारी लेता है, फिर किस अंग को किस विटामिन के आधार से अच्छा रखा जा सकता है, फिर वो विटामिन्स किस-किस खाद्य पदार्थ में पाये जाते हैं, क्या खायें, क्या न खायें, कितने घंटे सोयें,

एक शब्द कॉन्फिडेंस है, वो आया कहाँ से होगा? जब हम अपने बच्चे को कोई गाइड लाइन देते हैं, कुछ बताते हैं, तो उस समय कह देते हैं कि इसको इस चीज़ में थोड़ा कॉन्फिडेंस कम है। तो उस कॉन्फिडेंस को बढ़ाने के लिए हम बीच-बीच में ऐसी बातें बच्चों को समझा देते हैं। तो कॉन्फिडेंस का कनेक्शन नॉलेज से है। जिसको जितनी नॉलेज, वो व्यक्ति उतना कॉन्फिडेंट। दुनिया के सारे क्षेत्र, सब इसी आधार पर आधारित हैं। कोई आईएएस ऑफिसर हो या कोई एक क्लर्क हो, दोनों की योग्यता और उसके नॉलेज के आधार से उसको वेतन मिलता है। ये तो हो गई लौकिक दुनिया की बात, या शरीर निर्वाह अर्थ जो कर्म करते हैं उसकी बात। लेकिन अध्यात्म में या मनोवैज्ञानिक पहलू में इसका क्या रोल है, उसको समझते हैं।

कितने घंटे काम करें, कब पानी पियें, कैसे चलें, कैसे उठें-बैठें, यह सब कुछ पाँच-छः सालों में वे पढ़ते और सीखते हैं, फिर भी तसल्ली नहीं होती तो वे प्रैक्टिस करते हैं। क्योंकि जितना अनुभव बढ़ता जाता है, उनको शरीर की गहरी समझ होती जाती है।

तो आप सोचो, हम जितनी नॉलेज किसी भी सब्जेक्ट में इकट्ठी करते हैं, हम उतने ज़्यादा कॉन्फिडेंट होते हैं और लोग भी आप पर उतना ही भरोसा जताते हैं, क्योंकि इतनी ज़्यादा नॉलेज है उस चीज़ की। मन की गतिविधि, मन में उठने वाले उद्वेग, उनसे उत्पन्न होने वाली तरंगें हमारे

संकल्पों को हिलाकर रख देती हैं। हालांकि ये सारे कुछ संकल्प ही हैं, लेकिन संकल्प में इतना बिखराव सिर्फ और सिर्फ नॉलेज की कमी के कारण है। हम सबको पता है कि जीने के लिए हमको बहुत कम चीज़ों की आवश्यकता है, लेकिन फिर भी बुद्धि द्वारा इन बातों की गहरी समझ न होने के कारण हम दिन-रात पाने और लेने की इच्छा में भागते रहते हैं। लोभ वृत्ति बढ़ती है, मोह बढ़ता है, उसको बचाने के लिए डर हमेशा बना रहता है। आप सोचो कि जिस चीज़ से मुझे पल-पल सुख मिलना चाहिए, वो अगर कहीं भी मेरे दुःख का आधार बने तो ऐसी चीज़े करने वाला क्या बुद्धिमान माना जायेगा, समझदार माना जायेगा!

बाहर के लोग हमारे हितैषी नहीं हैं किसी भी तरह से, क्योंकि जब वे हमें सिखाते हैं ना तो कहते हैं कि पैसा कमाने का तरीका मैं तुम्हें सिखा रहा हूँ, घर बनाने का तरीका सिखा रहा हूँ, कैसे किसी को ठगते हैं, कैसे किसी को उलझाते हैं, अपना काम बनाने के लिए कैसे दूसरों को परेशान करते हैं। और जब पूछो तो कहते हैं, ऐसा दुनिया में चलता है, और साथ में परेशान भी हैं अपने घर से, परिवार से, लेकिन उनको समझ में नहीं आता कि हमको सिखाने वाला ये वाली बातें सिखा रहा है, मतलब हममें नॉलेज की कमी है। अब देखो, परमात्मा का रोल क्या है, परमात्मा हमको सिर्फ और सिर्फ अच्छा सोचना सिखाते हैं। सबसे पहले खुद के बारे में, फिर दूसरों के बारे में। सोचना कैसे है, उसमें कितनी पॉज़िटिविटी चाहिए, कितना दुनिया के लिए बेहद की भावना चाहिए, सबके लिए कल्याणकारी भाव चाहिए, ये हमको बताते हैं।

अब इसमें देखिए, क्या अनकॉमन है? अनकॉमन ये है कि जैसे ही हम दूसरों के बारे में सोचने से पहले अपने बारे में सोचते हैं और अच्छा सोचते हैं, पॉज़िटिव सोचते हैं, समझ के सोचते हैं, तो हमारा भाग्य हमारे साथ अच्छा होना शुरु हो जाता है। कहावतें तो आपने बड़ी सुनी हैं कि दुनिया में अकेले आये हैं अकेले जाना है, तो जब हम अकेले आये हैं तो अकेले रहने का तरीका भी तो आना चाहिए ना। हम तो दूसरों को ठग के, दूसरों को तकलीफ देकर के अच्छा रहने की कोशिश करते हैं।

आप ये सोचो कि हमें बहुत कम समय इस जन्म में मिलता है, ज़्यादा से ज़्यादा 50, 60, 70 साल। उसमें से ज़्यादा समय तो हम इन कामों में ही बिता देते हैं जो गलत हैं। तो समझदारी क्या है, जितना ज़्यादा खुद के बारे में अच्छा सोचना, यहाँ 'खुद के बारे में' का अर्थ स्वार्थी होना नहीं है, यहाँ खुद के बारे में अच्छा सोचने का अर्थ है कि हम किसी का नुकसान नहीं कर रहे हैं। नुकसान तो तब होता जब हम दूसरों का अहित कर रहे हों। लोग कहते हैं कि आप अपने ही बारे में सोच रहे हैं, लेकिन हम अपने ही बारे में नहीं सोच रहे हैं, हम सिर्फ सही सोच रहे हैं खुद को अच्छा बनाने के लिए। इसमें धन-मन, पैसे-रुपये की बात नहीं है।

इसलिए आज हम अनिश्चित रूप से जीवन को व्यतीत करते हैं, डरते हैं कि कब कुछ बुरा न हो जाये। क्यों, निश्चय क्यों नहीं है, क्योंकि हमने पूरे जीवन सिर्फ और सिर्फ गलत ही किया, गलत तरीके से किया इसलिए कॉन्फिडेंस नहीं है। जो व्यक्ति जीवन को समझ गया, जितना नॉलेजफुल बनता चला गया, उतना वो इस जीवन को निश्चय के साथ जियेगा, चाहे शरीर के मामले में हो, चाहे व्यवहार के मामले में हो या चाहे संसार या समाज के साथ मेल मिलाप की बात हो। तो नॉलेजफुल बनना है, अगर निश्चय के साथ जीना है तो।

पन्ना-म.प्र.। ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के पश्चात् बृजेन्द्र प्रताप सिंह,खनिज एवं श्रम राज्यमंत्री तथा विष्णुदत्त शर्मा,सांसद,खजुराहो लोकसभा क्षेत्र को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद देते हुए ब्र.कु. सीता बहन,प्रभारी,उपसेवाकेन्द्र,ब्रह्माकुमारीज़।

पटना-बिहार। राम चंद्र प्रसाद सिंह,केन्द्रीय लौह इस्पात मंत्री,भारत सरकार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट कर ईश्वरीय सेवाओं की जानकारी देते हुए ब्र.कु. स्नेहा बहन तथा ब्र.कु. ज्योत्सना बहन।

दिल्ली-हरिनगर। जयसिंह रोड,नई दिल्ली स्थित पुलिस हेड क्वार्टर में कमिश्नर ऑफ पुलिस राकेश अस्थाना को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सारिका बहन। साथ हैं ब्र.कु. शालू बहन तथा ब्र.कु. रिटा. कर्नल सती।

पटना-बोरिग रोड। अमृत लाल मीणा,आई.ए.एस.,प्रिन्सीपल सेक्रेट्री बिहार सरकार को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अनीता बहन।

अमरावती-महा.। अमरावती पालिका आयुक्त प्रशांत रोडे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सीता दीदी। साथ हैं ब्र.कु. भारती बहन तथा ब्र.कु. शिरभाते भाई।

इटारसी-म.प्र.। नवरात्रि के शुभ अवसर पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता बहन द्वारा चैतन्य नौ देवियों की झाँकी सजाई गई।

पानीपत-हरियाणा। पानीपत के 1978 बैच के इंजीनियरिंग कॉलेज के सहपाठियों के लिए आयोजित दो दिवसीय सेमिनार के दौरान संजय भाटिया,मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट,करनाल शामिल हुए। सेमिनार में इस बैच के शहर के पचास से अधिक इंजीनियर्स ने भाग लिया। मुख्य रूप से ओ.पी. गोयल,चीफ इंजीनियर,एफ.सी.आई. हरियाणा, ईश्वर जी,अधीक्षण अभियंता,डी.डी.ए. दिल्ली, के.के. वर्मा,निर्देशक,मुम्बई, ब्र.कु. भारत भूषण,निर्देशक,ज्ञान मानसरोवर तथा अन्य इंजीनियर्स ने सेमिनार का उद्घाटन किया। सर्कल इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी ने सभी को ईश्वरीय सौगात भेंट की व राजयोग मेडिटेशन सीखने का आह्वान किया। ब्र.कु. सुनीता बहन,संचालिका,हुड्डा सेंटर,पानीपत, ब्र.कु. कविता बहन,संचालिका,सुखदेव नगर,पानीपत तथा ब्र.कु. ज्योति बहन,हुड्डा सेंटर ने विभिन्न सत्रों को सम्बोधित किया। अंत में सभी ने परिसर में व्यक्तिगत रूप से वृक्षारोपण किया।

भादरा-राज.। शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शिक्षकों को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. चन्द्रकांता बहन, भारत सैनिक स्कूल के चेयरमैन अमर सिंह, एपेक्स स्कूल के प्रिन्सीपल सुशील जी, गवर्नमेंट स्कूल सीनियर सेकेण्डरी के प्रधान आचार्य जय वीर जी, गवर्नमेंट स्कूल मैथ लेक्चरर हीरालाल जी तथा अन्य शिक्षकों के साथ ब्र.कु. भगवती बहन।

ढिगावा मंडी-हरियाणा। उत्तर भारत के प्रसिद्ध पहाड़ी माता मंदिर के नवरात्रि मेले में कार्यक्रम के दौरान मंदिर के पुजारियों को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. शकुंतला बहन, ब्र.कु. पूनम तथा ब्र.कु. मीनू।